मोरंगे

जनवरी–फरवरी 2016

इस बार

सुमन मीणा, कक्षा–5

खिड़की

3 कहानी

कविताएँ

4 रक्षाबंधन / पेड़

5 बापू / शेर की बारात

6 टी–टी पी–पी / कौन

7 काम

कहानियाँ

8 पैसे कहाँ से लायेंगे

9 गधा

10 अमरसिंह

11 पक्के मित्र / चार मित्र

12 जरूरत

13 फलों का रस

14 धन्यवाद

15 साथी

याद की धूप–छाँव में

16 जीवन में माँ का महत्त्व

17 नटखट बच्चे

बात लै चीत लै

18 दे दो आज्ञा

19 सावित्री बाई फूले

20 मटरगश्ती बड़ी सस्ती

22 कुछ हमने बढ़ायी ...

सम्पादन : विष्णु गोपाल मीणा
सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : तुलसीराम गोचर
वितरण : जितेन्द्र अग्रवाल

प्रबंधन
विजेन्द्र पाल
सचिव, **ग्रामीण शिक्षा केन्द्र**
आवरण पर चित्र :**अरुण बैरवा,** कक्षा 4, राजकीय विद्यालय बादलगंज एवं **शिवानी,** कक्षा 6

जनवरी–फरवरी 2016, वर्ष 6, अंक 67–68

मोरंगे' का प्रकाशन 'यात्रा फाउण्डेशन' आस्ट्रेलिया एवं 'हैसली फैमिली फाउण्डेशन' के सहयोग से हो रहा है।

पत्रिका का पता

मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
हॉटल सिटी हार्ट के सामने,
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
राजस्थान 322001

फोन : 07462–220957
फैक्स : 07462–220460

कहानी

नानी नानी बोल कहानी।
नानी बोली लो सुनो कहानी।
एक बड़ा सा जंगल था।
उसमें शेर रहता था।
शेर बहुत नालायक था।
रोज शिकार करता था।
कोई न उससे बचता था।
एक तितली जंगल में आई।
शेर ने उसको देखा भाई।
ऊँचा होकर दहाड़ लगाई।
बोली तितली शान्त रहो।
मेरा कुछ न कर पाओगे।
पीछे फिर पछताओगे।
अपना मुँह लटकाओगे।
शेर उसके पीछे भागा।
तितली उड़कर फूल पर गई।
फूल से पर्वत पर गई।
नदी के ऊपर झाड़ी के नींचे।
शेर बेचारा पीछे–पीछे।
उठता–गिरता थकता चलता।
बैठ पेड़ पर बोली तितली।
कहो भाई साहब, क्या हाल है?
गिर जमीन पर बोला शेर।
मेरा बुरा हाल हुआ।
तुम जीती मैं हार गया।

मंजु मीणा,
समूह–उजाला
उम्र–11 वर्ष

सोनू मीणा,
खुशबू, उमंग–10 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा।

रक्षाबंधन

राखी आई, राखी आई
शुभकामनायें साथ में लाई।
मीठा तीखा कुछ भी खाओ
भाई बहनों को खूब खिलाओ।
बहन भाई के राखी बांधे
रक्षक हो तुम याद दिलाते।
भाई बहन का बंधन प्यारा
दुनिया में जो सबसे न्यारा।

राधिका, उम्र–12 वर्ष, समूह–शीशम,
रा.बा.उ.प्रा.वि. आवासन मण्डल

पेड़

पीले हों तो फल पक जाते
हरे हो तो फल कच्चे रह जाते
पेड़ों पर जब बैठे चिड़िया
फल तेजी से बढ़ता है
राहगीर जब थककर बैठे
मिलती ठण्डक पेड़ के नीचे
लगे जब उसको भूख
उसको मिलते मीठे फल।

ज्योति मीणा, कक्षा–8,
उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

अंजलि, 13 वर्ष, समूह–शीशम

आरती,
8 वर्ष, समूह–प्रताप

बापू

सब लोगों से न्यारे बापू
मुश्किल से नहीं घबराते बापू
अच्छी राह दिखलाते बापू
सबको गले लगाते बापू
बच्चों को हंसाते बापू
पिकनिक पर ले जाते बापू
सबको खाना खिलाते बापू
सुबह दौड़ लगवाते बापू
सबको गुब्बारे दिलवाते बापू।
सबको कपड़े दिलवाते बापू
सबको स्कूल भेजते बापू
सबके मन को भाते बापू

लीला बैरवा, उम्र–12 वर्ष, समूह–तिलक,
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

शेर की बारात

शेर की बारात में।
धूम मचेगी रात में।
हाथी की सवारी होगी।
नीचे घोड़ा–गाड़ी होगी।
भालू ढोल बजाएगा।
मोर नाच दिखाएगा।
गधा तान सुनायेगा।
बंदर पूँछ हिलाएगा।
दूल्हा–दुल्हन साथ में।
झूमेंगे हम रात में।
शेर की बारात में।
धूम मचेगी रात में।।

किरन मीणा, समूह–सावन,
उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा।

टी–टी पी–पी

मोटर बोली
पी, पी, पी
बिल्ली बोली
म्याँऊ, म्याँऊ, म्याँऊ
कुत्ता बोला
भौं, भौं, भौं
मोर बोला
पीऊ, पीऊ, पीऊ,
चिड़िया बोली
चीं, चीं, चीं
कबूतर बोला
गुटर–गू, गुटर–गू, गुटर–गू
कौआ बोला
काँव, काँव, काँव
मेंढक बोला
टर्र, टर्र, टर्र
तोता बोला
टी, टी, टी

सपना मीणा, कक्षा–5,
उम्र–10 वर्ष, बोदल

कौन

टन–टन–टन बोला टेलीफोन
हैलो–हैलो बोल रहे हैं कौन
मैं तो बोल रहा गोपाल
लेकिन आप बताओ कौन
तेरी मम्मी का पति
मेरी मम्मी का पति कौन
तेरे मामा का जीजा
मेरे मामा का जीजा कौन
तेरे नाना का जंवाई
मेरे नाना का जंवाई कौन
तेरी मौसी का जीजा
मेरी मौसी का जीजा कौन
तेरे दादा का बेटा
मेरे दादा का बेटा कौन
तेरी दादी का बेटा
मेरी दादी का बेटे आप?
ओ हो मतलब आप!
हाँ रे बेटा, तेरा बाप।

राधिका, समूह–शीशम, उम्र–13
वर्ष, रा.बा.उ.प्रा.वि. आवासन मंडल

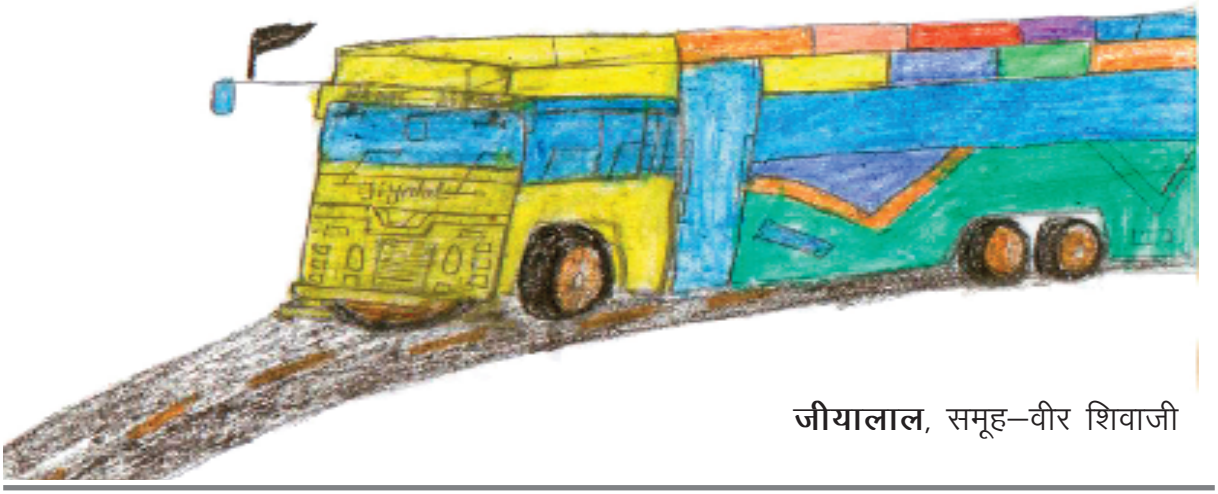

जीयालाल, समूह–वीर शिवाजी

काम

काम करो भाई काम करो,
मिल जुल कर सब काम करो।
शाम को फिर खाना खाकर,
जमकर तुम आराम करो।

मत लड़ो भाई मत लड़ो,
आपस में तुम मत लड़ो।
पंच पटेलों को बैठाकर,
बातचीत से सुलह करो।

साफ करो भाई साफ करो,
आस–पास को साफ करो।
तसला झाड़ू लेकर तुम,
अपने गाँव को स्वच्छ करो।

रजनी प्रजापत, कक्षा–4, उम्र–10 वर्ष बोदल

मनीषा गुर्जर,
समूह–पीपल, उम्र–13 वर्ष

पैसे कहाँ से लायेंगे

एक गाँव में एक व्यक्ति अपनी पत्नी के साथ रहता था। वे बहुत गरीब थे। एक दिन पत्नी ने कहा, ''अपने भी एक भैंस ले आते हैं।'' पति ने कहा, ''पैसे कहाँ से लायेंगे?'' पत्नी कहती है कि, ''चलो फसल उगायें।'' पति बोला, ''बीज कहाँ है?''

सुमन, बोदल स्कूल

उसकी पत्नी पड़ौसी के पास से कुछ बीज लेकर आती है और दोनों मिलकर खेत में बीज डालते हैं। वर्षा हो जाती है जिससे फसल बढ़ने लगती है। कुछ समय बाद फसल पककर तैयार हो जाती है। दोनों पति–पत्नी मिलकर फसल काटकर बीज व चारा अलग–अलग करके रख देते हैं।

कुछ ही वर्षों में वे लोग अमीर हो जाते हैं। उनके छोटे–छोटे बच्चे भी अब बड़े हो चुके हैं। यह चार लोगों का परिवार खुशी–खुशी रहने लगा। इसी दौरान एक दिन उनके घर पर चोरी हो जाती है। वह समझ नहीं पा रहा था कि आखिर यह काम किसने किया है। उसका बड़ा बेटा समझदार था। वह अपने स्तर पर ही चोर की जासूसी करने लगता है। बड़े बेटे को घर से चोर के पैरों के निशान मिल गये जो कि पड़ौसी के घर तक जा रहे थे। उसे पड़ौसी पर पूरा शक हो जाता है कि चोरी करने वाला यही व्यक्ति है।

बड़ा लड़का पुलिस को फोन करता है। पुलिस आती है और पूछताछ करती है तो वह पुलिस को सब कुछ बता देता है। पुलिस पड़ौसी को गिरफ्तार कर लेती है और चोरी किया हुआ सारा सामान बरामद करती है। वह परिवार फिर खुशी से रहने लगा।

यक्ष, उम्र–9 वर्ष, समूह–खेजड़ी, रा.बा.उ.प्रा.वि. आवासन मण्डल

गधा

एक कुम्हार था। उसके पास सुल्तान नाम का एक गधा था। कुम्हार गधे को बहुत प्यार से रखता था लेकिन गधे को कुम्हार का काम रास नहीं आता था। एक दिन गधा घर से भाग गया। गधा जंगल में जा पहुँचा। गधे को जंगल में प्यास

सोनू, रंगोली, उम्र–8 वर्ष

लगी लेकिन उसको पानी नहीं मिला। गधे को रास्ते में एक सियार मिला। गधे ने सियार से कहा, ''मुझे बहुत तेज प्यास लगी है।'' सियार उसे एक तालाब पर ले गया। गधे ने तालाब में पानी पिया। गधे और सियार में दोस्ती हो गई। कुम्हार गधे को ढूँढने निकल गया। उसे रास्ते में एक लोमड़ी मिली। कुम्हार ने लोमड़ी से पूछा, ''तुमने मेरा गधा देखा है क्या?'' लोमड़ी बोली, ''मैंने तुम्हारे गधे को तालाब में पानी पीते देखा है।'' कुम्हार तालाब पर गया लेकिन कुम्हार को गधा नहीं मिला और तालाब के पास एक खरेगोश मिला। खरगोश ने कुम्हार से पूछा, ''कुम्हार भाई क्या ढूंढ रहे हो?'' कुम्हार ने कहा, ''मेरा गधा खो गया है, क्या तुमने मेरा गधा देखा है?'' खरगोश ने कहा, ''मैंने तुम्हारे गधे को सियार के साथ देखा है। वे रोज दोपहर में इस तालाब पर पानी पीने आते हैं।'' कुम्हार तालाब के पास झाड़ी में छिपकर बैठ गया। दोपहर होते ही सियार व गधा तालाब पर पानी पीने आये। जैसे ही गधा पानी पीने लगा तो कुम्हार ने रस्सी उसके गले में डाल दी। गधे को पकड़ लिया और अपने घर ले आया।

राजकुमारी बैरवा, कक्षा–5, राजकीय विद्यालय पावण्डी।

अमरसिंह

एक बार दो भाई थे। एक का नाम धर्मसिंह था, दूसरे का नाम अमरसिंह था। धर्मसिंह का विवाह हो गया था। अमरसिंह का विवाह नहीं हुआ था। धर्मसिंह की औरत का नाम अनिता था। गाँव में जिनका विवाह नहीं होता वे गाय चराने जाते थे। अमरसिंह ने सोचा अपना तो विवाह हुआ नही तो अपन क्या करें? वह अपने गाँव की गाय लेकर चराने लगा। उसके पास एक बाँसुरी थी। उसने गायों से कहा कि जब मैं बाँसुरी बजाऊँ तब तुम इस पेड़ के नींचे आ जाना। वह बरगद के पेड़ पर चढ जाता और वहीं से गायों की रखवाली करता। शाम के समय अमरसिंह बाँसुरी बजाता तो सब गाय आ जाती। एक दिन अमरसिंह को पेड़ पर नींद आ गई। जब उसकी आखँ खुली तो दिन छिप गया। गाय बिना बाँसुरी सुने ही बरगद के पेड़ के नीचे आकर बैठ गई थी। गायों को देखकर अमरसिंह पेड़ से नीचे उतरा। वह चलने ही लगा इतने में दो आदमी आये। उन आदमियों ने कहा, ''भाई! तुम हमको दूध पिला दो।'' अमरसिंह ने पत्तों का दोना बनाकर गाय का दूध निकालकर उन

श्यामा, शीशम, उम्र–15 वर्ष

आदमियों को पिला दिया। आदमियों ने कहा, ''तुमने जंगल में हमारी मदद की है। हम भी तुम्हारी मदद करना चाहते हैं। तुम गाय का थोड़ा सा सूखा हुआ गोबर लेकर आओ।'' अमरसिंह गोबर ले आया। आदमियों ने कहा, ''तुम इस पर बैठकर जो मांगा. गे वह तुम्हें मिल जायेगा।'' अमरसिंह ने मालपुए मांगे तो उसके पास बहुत सारे मालपुए आ गये। फिर उसने भी खाये और गायों को भी मालपुए खिलाये। अमरसिंह गायों को लेकर वहाँ से आ गया। आज उसकी गायों ने दूध भी ज्यादा दिया।

मोनू मीणा, उम्र–10 वर्ष, समूह–खुशबू, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा।

पक्के मित्र

एक बार एक शेर और एक बंदर दोनों दोस्त थे। वे दोनों एक दिन जंगल में घूमने गये तो उनको जंगल में एक बकरी मिली। वे बकरी से बोले कि हमें बहुत जोर की भूख लगी है। हम तुम्हे खायेंगे। बकरी बोली नहीं मुझे मत खाओ, मैं तुम्हें फल का पेड़ बताती हूँ। वे पेड़ के पास गये तो उन्होंने खूब फल खाये। वे बकरी से बोले तुमने हमारी भूख मिटाई है। हम तुझे अपना दोस्त बना लेते हैं। वह बोली ठीक है। वे तीनों पक्के मित्र बन गये।

अशोक केवट, कक्षा–3, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

चार मित्र

एक दिन की बात है। चार मित्र कहीं घुमने जा रहे थे। वे चलते–चलते थक गये। तभी एक मित्र बोला, ''मुझसे चला नहीं जा रहा है।'' तीनों मित्र उसको अपने कंधों पर बैठाकर चल दिये। चलते–चलते उन्हें राजा का महल दिखाई दिया। चारों मित्र उस महल की ओर चल दिये। उन्होंने दरवाजे पर प्रहरी से कहा, ''हमे राजा से मिलना है।'' प्रहरी बोला, ''रूको मैं राजा से पूछकर आता हूँ।'' राजा ने उन्हें अंदर बुला लिया। राजा उनसे बोला, ''क्या लेने आये हो?'' वे चारों बोले, ''हम बहुत गरीब हैं, हमें कुछ खाने–कमाने के लिए दे दो।'' राजा ने मंत्री से कहा कि इनके लिए हीरे लेकर आओ ताकि उस धन से ये कुछ काम कर सके। मंत्री उनके लिए हीरे लेकर आया और उन चार मित्रों को दे दिये। चारों वहाँ से वापस आ गये और हीरे बेचकर बहुत अमीर हो गये। उन चारों ने एक बस खरीद ली। शुरू में तो उन्हा. ने बस ठीक से चलाई। बाद में आलसी हो गये। अब वे सवारियों को कहीं भी छोड़ देते, यात्रियों को पेरशान करते। इस बात की शिकायत राजा से हुई। एक दिन उस बस को राजा के सिपाहियों ने रोक लिया और उन चारों मित्रों को पकड़ कर राजा के पास ले गये। राजा ने उनकी पिटाई करवाई। मार खाकर उनकी अक्ल ठिक. ाने आ गयी। वे बोले, ''हम कभी बस नहीं चलायेंगे और किसी यात्री को परेशान भी नहीं करेंगे, हमें माफ कर दो।'' राजा ने उन्हें माफ कर दिया। उन्होने राजा से सिपाही बनाने के लिये कहा। उनको लगा वे सिपाई का काम अच्छा कर सकते हैं। राजा ने उनकी बात मान ली और अपने यहाँ सिपाही बना लिया।

शंकर नायक, समूह–तिलक, उम्र–11 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

जरूरत

शिवांगी,
समूह–कदम्ब,
उम्र–8 वर्ष

एक बार एक पेंसिल और एक किताब थी। एक दिन दोनों ने सोचा कि हम काम करने चलेंगे। किताब तो मिट्टी पटकने जाती थी और पेंसिल नदी किनारे जाती थी। किताब रोजाना मिट्टी लाती थी और पेंसिल पानी लाती थी। जब पेंसिल चलते–चलते थक जाती तो कटर (शॉर्पनर) के पास जाती और अपने पैलों को तेज करवा लेती। एक दिन किताब पर पेंसिल ने पानी डाल दिया। किताब गन्दी हो गई। किताब बोली, ''ये तुमने क्या किया। अब सब कुछ पहले जैसा कैसे होगा? तुमहारी इन्ही गलतियों के कारण मैं बहुत गंदी हो गई हूँ।'' पैंसिल ने कहा, ''मैं जान बूझकर नहीं करती, हो जाता है।'' किताब ने कहा, ''तुम्हारी गलतियों को सुधारने के लिये घर में रबर को भी लाना होगा।'' उनके पास रबर नहीं था। एक दिन पेंसिल नदी से आते समय लेट हो गई। उसके पास से एक कटर गुजरी तो कटर ने कहा, ''आज इतने लेट कैसे हो गई हो?'' पेंसिल ने कहा, ''मैं थोड़ा पानी भरने में लेट हो गई हूँ।'' कटर ने पेंसिल से कहा आप मेरे घर चलो पेंसिल चली गई। वहाँ कटर के साथ रबर भी रहता था। पेंसिल को रबर की जरूरत थी। उसे किताब की बात याद आई। पेंसिल ने रबर को अपने साथ चलने को कहा। पर रबर नहीं माना। पेंसिल ने कहा, ''तुम हमारे घर में आराम से रहना। तुमको कोई काम करने की भी जरूरत नहीं है। सारा काम हम कर लेंगे। बस तुम तो हमारी गलतियों को मिटाकर साफ कर दिया करना।'' रबर को पेंसिल का प्रस्ताव अच्छा लगा और वह पेंसिल के साथ चलने को राजी हो गया। अब किताब, पेंसिल और रबर आराम से रहते। तीनों बहुत खुष थे। किताब को अब गन्दा होने की चिन्ता नहीं थी।

नीरू, उम्र–9 वर्ष, समूह–सागर, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

फूलों का रस

एक बार तितली और कौआ दोनों दोस्त थे। दोनों को बहुत तेज भूख लग रही थी। कौआ बोला, ''हम दोनों नदी किनारे चलते हैं वहाँ मछली पकड़कर खायेंगे।'' दोनों जल्द ही नदी किनारे पहुँच गये और तुरंत कौए ने एक मछली पकड़ ली। कौआ बोला, ''लो तितली तुम इसे खा लो, मैं और मछली पकड़कर लाता हूँ।'' तितली ने कहा, ''मेरा मन मछली खाने का नहीं कर रहा है, इसलिए हम इसे नहीं खायेंगे।'' कौआ बोला, ''तो फिर हम क्या खायेंगे?'' तितली ने कहा, ''आज हम रस पीयेंगे।'' कौए ने मछली को वापस पानी में डाल दिया। दोनों रस पीने चले गये। चलते–चलते वे एक बागीचे में पहुँचे। तितली ने वहाँ फूलों का रस पीया, पर कौआ तो देखता रहा। उसे समझ ही नही आया कि वह क्या करे। जब तितली ने देखा कि कौआ अपनी मोटी पैनी चोंच से रस नहीं पी पा रहा है तो उसने कौए के लिये भी फूलों का रस निकाला और कौए को पिलाया। कौए ने रस पहली बार पीया था। उसे रस बहुत पसन्द आया। दोनों अपना पेट भर कर वापस लौट आये।

रजनी प्रजापत, उम्र–10 वर्ष, कक्षा–4, राजकीय प्राथमिक विद्यालय बोदल

भरत लाल गुर्जर, शिक्षक, बोदल स्कूल

धन्यवाद

जीतेन्द्र, वीर शिवाजी

एक बार बहुत सारे जानवर जंगल में एक स्थान पर एकत्रित हुए थे। उनमें एक छोटी चिड़िया भी थी। चिड़िया को प्यास लगी तो वह पानी पीने तालाब चली गई। वह चिड़िया पानी पीने के लिए तालाब में उतरी ही थी कि पीछे से एक शेर आ गया। शेर पानी पीती हुई चिड़िया को मारकर खा गया। जब एकत्रित सभी जानव. रों को चिड़िया की मौत का पता चला तो बहुत दु:खी हुए। उन्होंने शेर को सजा देने का प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास कर दिया। शेर को प्रस्ताव का पता चला तो वह नाराज हो गया और एक–एक करके सभी जानवरों को मारकर खा गया।

पेट में जाकर सभी जानवरों ने फिर सभा की और षेर को सबक सिखाने के लिये योजना बनाई। सरपंच ने आदेश दिया खतरनाक और पैने पंजे वाले जानवर षेर के पेट को नोचना–खरोचना शुरू करें। थोड़ी देर बाद शेर के पेट में दर्द होने लगा। शेर दर्द से परेशान होने लगा। कुछ देर बाद षेर को खून की उल्टी हुई और सारे जानवर बाहर निकल आये। चिड़िया ने सभी को धन्यवाद दिया और वह उड़ गई।

भूमिका, उम्र–9 वर्ष, समूह–बरगद, रा.बा.उ.प्रा.वि. आवासन मण्डल

साथी

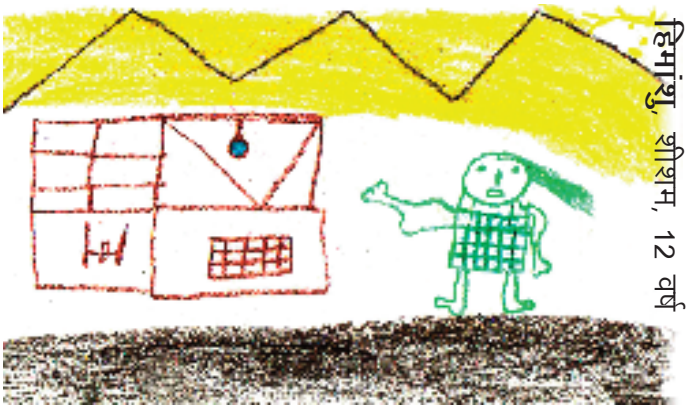

हिमांशु, श्रीराम, 12 वर्ष

एक बहुत पुराना गाँव था। उस गाँव में एक बार बहुत जोर का अकाल पड़ा। अकाल में लोगों के खाने–पीने का सामान खत्म हो गया। लोग वहाँ से जाने लगे। जो नहीं जा सके वे मरने लगे। धीरे–धीरे गाँव में एक घर बचा। उस घर के पास ही एक पेड़ भी था। जो अभी भी हरा–भरा था। उस घर में एक आदमी जिन्दा बचा था। वह बहुत बुढा था और लकड़ी के सहारे चलता था। उसकी एक बेटी थी। वह पक्षियों से बहुत प्यार करती थी। जो भी पक्षी आता उस पेड़ पर बैठ जाता था। बेटी उनको पानी पिलाती थी। पर अब उस पेड़ पर कोई पक्षी नहीं आता था। एक दिन एक पक्षी उस पेड़ पर आया और बैठ गया। बेटी ने उसको पानी पिलाया। बेटी ही उसके खाने–पीने का ध्यान रखती थी। पक्षी और बेटी में गहरी दोस्ती हो गई। दोनों एक दूसरे के बिना नहीं रह पाते थे। उस जंगल में कोई और था भी नहीं। जिसके साथ मन लगता।

एक दिन बेटी बाजार गई तो पक्षी को भी जाल में पैक कर अपने साथ ले गई। बाजार से पक्षी के लिये दाल–मिर्च आदि लेकर आई। घर आकर उसने जाल खोल दिया। पक्षी उड़कर पेड़ पर जा बैठा। दो दिन बाद उसने पेड़ पर दो अण्डे दिये। जब बेटी को यह पता चला कि मेरे प्यारे पक्षी ने अण्डे दिये हैं तो वह भागी–भागी पेड़ पर चड़ गई और अण्डों को देखने लगी। उसने पक्षी के दाने पानी का ध्यान रखा। कुछ दिन बाद उनमें से बच्चे निकल आये। बेटी उनको खेल खेलाती। बुढा पेड़ के नीचे गया तो देखा बेटी बच्चों को खेला रही थी। बेटी ने पास आकर बुढे को बताया, बाबा मेरे प्यारे पक्षी के दो बच्चे हुए हैं। बुढा भी अपनी बेटी को मग्न देखकर खुष हुआ। बेटी ने बच्चों को पेड पर रख दिया और अपने घर में जाकर सो गई।

धीरे–धीरे पेड़ पर पक्षियों का परिवार बन गया। जंगल भी हरा भरा हो गया। खाने–पीने की भी समस्या अब नहीं रही। बेटी पक्षियों के साथ सारा–सारा दिन रहती और मजे करती।

गोलू गुर्जर, कक्षा–5, उम्र–11 वर्ष बोदल

यादों की धूप–छाँव में

जीवन में माँ का महत्व

माँ हमें नवजीवन देती है। माँ हमारे जीवन में महत्त्वपूर्ण होती है। अगर माँ नहीं होगी तो हम अधूरे हैं क्योंकि माँ पहले तो हमें पैदा करती है फिर हमें पाल–पोषकर बड़ा करती है। जो माँ बचपन में हमको संभालती है, अगर उसी माँ को हम बड़े होकर नहीं संभालें तो यह गलत है। माँ हमारे लिए सुबह जल्दी उठती है। हमारे लिए टिफिन तैयार करती है, नहलाती है, स्कूल भेजती है, छुट्टी के समय लेने जाती है, कपड़े धोती है, शाम को खाने की तैयारी करती है, खाना खिलाती है और फिर रात को सुलाते वक्त हमें लोरी या कहानी सुनाती है। माँ यह सब काम पूरे दिन में करती है वह शाम को बिल्कुल थक जाती है। इसलिए जल्दी सो जाती है, क्योंकि उसको चिंता रहती है कि सुबह जल्दी उठना है।

आरती सैनी, 13 वर्ष, समूह–झरना

मेरी माँ मुझसे बहुत प्यार करती है। मैं भी माँ को बहुत प्यार करती हूँ। मेरी माँ मेरे लिए बहुत जरूरी है। मैं ज्यादातर माँ के साथ ही रहती हूँ। अगर किसी के माँ नहीं होती होगी तो उसके जीवन में बहुत कठिनाईयाँ होती है। क्योंकि माँ जैसा प्यार हमें कोई नहीं दे सकता। मेरी तो यही कामना है कि दुनिया में हर बच्चे को माँ का प्यार मिले।

माँ खुद गीले में सोती है और हमें सूखे में सुलाती है। माँ हमें मार लेती है लेकिन किसी दूसरे को मारने नहीं देती है। माँ हमारे लिए न जाने कितनी मुसीबतें झेलती हैं। अगर हमें पढ़ना हो तो माँ कहीं से भी पैसे कमाके लाएगी। भले ही उसे नौकरानी ही क्यूँ न बनना पड़े। क्योंकि माँ सोचती है कि अगर मैं मर जाऊँगी तो पढ़ लिखकर मेरे बच्चे खुद अपनी जिंदगी बना लेंगे।

माँ बाप अगर हमारे लिए कोई सपना देखें और हम उसे पूरा न करें तो माँ को बहुत बुरा लगता है। माँ हमारे लिए बचपन से ही कोई ना कोई सपना जरूर सोचती है और अगर हम उस सपनों को पूरा कर दें तो माँ की खुशी का ठिकाना नहीं रहता।

मनीषा गुर्जर, उम्र–13 वर्ष, समूह–पीपल

रामधनी, उम्र–9 वर्ष, समूह–सागर

नटखट बच्चे

रणथम्भौर वन क्षेत्र के पास एक छोटा सा गाँव है बोदल। गाँव के किनारे घना जंगल है। उस जंगल में एक तोता अपनी पत्नि के साथ रहता था। जंगल के किनारे पर एक कुटिया थी। जहाँ पर दो शिक्षक रहते थे। शिक्षक बोदल गाँव में ही पढ़ाते थे। तोता रोजाना कुटिया पर आता और शिक्षकों के हाथ से जबरन खाना छीन कर ले जाता। निडर तोता शिक्षकों को भी अच्छा लगता था। शिक्षक भी तोते को खाना देते थे। एक दिन दो बच्चे जंगल की तरफ गये उन्होने तोते की पत्नि को पकड़ लिया। तोता जब शाम को आया तो उसको पता चला। वह उड़ता हुआ शिक्षक मित्रों के पास आया और टींटाते हुए सारी बात समझाई। शिक्षकों ने बच्चों को बुलाया। बच्चे उनके स्कूल के ही थे। उन्होने शिक्षकों की बात मान ली और तोते की पत्नि को छोड़ दिया। पत्नि को फिर से साथ पाकर तोता बहुत खुश था।

भरत लाल गुर्जर, शिक्षक, ग्रा.शि.के. रा.प्रा.वि.बोदल

दे दो आज्ञा

(धार्मिक आयोजनों पर गाया जाने वाला लोकभजन)

कालूराम, तिलक

राम चले वन को लखन चले जायेंगे
दे दो माता आज्ञा तो हम भी चले जायेंगे।
भूख लगेगी जब खाना कहाँ पर खाओगे
तोड़ लेंगे फूल–पत्तियाँ, खाते–खाते जायेंगे।
राम चले बन को, लखन चले जायेंगे
दे दो माता .....।

प्यास लगेगी जब पानी कहाँ पर पीओगे
देख लेंगे कुआ–कोठी, पीते–पीते जायेंगे।
राम चले वन को लखन चले जायेंगे
दे दो माता .....।

निंदिया आयेगी जब सोना कैसे सोयेंगे
लेई लेंगे खाट–पटिया, सोते–सोते जायेंगे।
राम चले वन को लखन चले जायेंगे
दे दो माता .....।

सुमेर कुमार जागा, उम्र–13 वर्ष, समूह–शीशम, रा.बा.उ.प्रा.वि. आवासन मण्डल

सावित्री बाई फूले

सावित्री बाई फूले का जन्म 3 फरवरी 1831 में हुआ था। उन्होनें भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीय महिलाओं के अधिकारों के लिये महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सावित्री बाई भारतीय व्यक्ति द्वारा संचालित प्रथम महिला विद्यालय की प्रथम शिक्षिका थी और उन्हें आधुनिक मराठा काव्य की विदुषी भी कहा जाता है।

ज्योतिबा के सहयोग से उन्होनें पढ़ना–लिखना सीखा। वे एक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान में दाखिल हुई तथा विशेष योग्यता के साथ उत्तीर्ण हुई। अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद 1848 में उन्होनें अपने पति के साथ मिलकर एक बालिका विद्यालय स्थापित किया। रूढ़िवादियों को यह नागवार गुजरा और उन्होनें हर मुमकिन तरीके से विरोध किया।

पुरूष प्रधान समाज में महिलाओं का बाहर निकल कर सफल होना अपने आप में अत्यधिक चुनौतीपूर्ण कार्य था। सुबह स्कूल जाना सावित्री बाई के लिये एक कठिन परीक्षा थी। रूढ़िवादी समाज ने इस साहसिक कार्य के लिए अपने आप को तैयार नहीं किया था। महिला शिक्षकों को क्रोध की नजरों से देखा जाता था। सभी विरोधों के बावजूद सावित्री बाई ने लड़कियों को पढ़ाना जारी रखा। जब कभी सावित्री बाई अपने घर से बाहर जाती तो रूढ़िवादी व्यक्तियों के समूह उनका पीछा किया करते, उनको भद्दी गालियाँ दी जाती। वे लोग उन पर सड़े हुए अण्डे, गोबर, टमाटर और पत्थर फेंकते थे। वे इस प्रकार के व्यवहार से दुखी हो गई थी। उन्होनें यह सब त्यागने का निश्चय किया, लेकिन अपने पति के प्रोत्साहन के कारण अपनी कोशिशों को जारी रखा। वह विद्यालय जाते समय अपने साथ थैले में एक और साड़ी ले जाती थी। दूसरी साड़ी वह विद्यालय में जाकर पहनती थी क्यों कि जो वाड़ी वह घर से पहन कर निकलती थी, वह कीचड़ आदि फेंके जाने से मैली हो जाती थी। फिर वापस घर लौटते समय उसी गन्दी साड़ी को पहन कर घर जाती थी। यह कठिन परीक्षा लम्बे समय तक चलती रही, जब तक कि सावित्री बाई ने एक व्यक्ति को थप्पड़ नहीं मारा जो उन्हें बेइज्जत करने की कोशिश कर रहा था। यह थप्पड़ उनकी कठिन परीक्षा का अन्त था। (स्रोत– विष्णु गोपाल)

चर्चा के लिए : 1. क्या स्त्री शिक्षा के विषय में आज भी ऐसे ही विचार हैं या कुछ परिवर्तन आया है? किस प्रकार का परिवर्तन?

2. एक सूची बनाएँ जिसमें उन तमाम कामों और पेशों का जिक्र हो जो आपकी दादी–नानी के जमाने में महिलाएँ नहीं कर सकती थीं।

मटरगश्ती बड़ी सस्ती

भाषा की सहेलियाँ
बूझो यार पहेलियाँ

कनिका, उम्र–10 वर्ष, कक्षा–6

1. चार पाँव, पर चल न पाए
   चलते को भी वह बैठाए।
2. मारे से वह जी उठे
   बिन मारे मर जाए।
3. दिन में मुर्दा
   रात में जिंदा
4. सदा करूँ चौकीदारी
   मेरे दम पे दुनियादारी।
5. अचरज बंगला एक बनाया
   ऊपर नीव तरे घर छाया।
   बांस न बल्ला बंधने घने
   कह खुसरो घर कैसे बने।

– विष्णु गोपाल

देवेन्द्र,
उम्र–4 वर्ष,
समूह–महक

हीहीही-ठीठीठी

1. एक व्यक्ति आइने में खुद को देख कर सोचने लगा, ''यार इसको कहीं देखा है?'' काफी देर टेंशन में सोचते–सोचते ''धत्त तेरी की, ये तो वही है। जो उस दिन मेरे साथ बाल कटवा रहा था।''
2. गुरूजी – पप्पू बताओ अस्पताल में जो चिन्ह + होता है उसका क्या मतलब है?
   पप्पू – गुरूजी जो खड़ा है वह डॉक्टर है और जो आड़ा है वह पैसेन्ट है।
   गुरूजी – गुरूजी आईसीयू में पहुँच गये।

भरत लाल गुर्जर, शिक्षक, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र रा.प्रा.विद्यालय बोदल

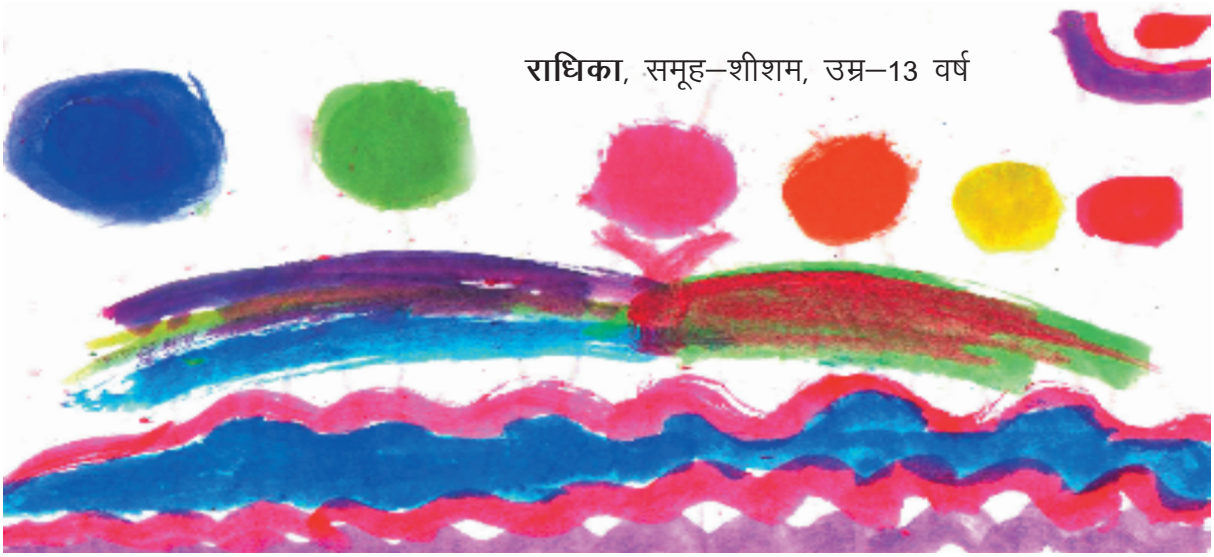

राधिका, समूह–शीशम, उम्र–13 वर्ष

3. दो दोस्त थे। एक ने कहा, भूख लग रही है क्या खायें? दूसरा दोस्त बोला, आगे चलो कुछ मिलेगा। फिर वे आगे गये तो एक तालाब मिला। उसमें बहुत सारी मछलियाँ थी। एक ने कहा, हम दोनों मछली खायेंगे। दूसरे ने कहा, मछली में तो कांटे होते हैं। तो दूसरे दोस्त ने कहा, तू क्यों चिंता करता है। हम तो चप्पल पहन कर खा लेंगे।

4. एक पहलवान था। उसे अपनी शक्ति पर बड़ा घमंड था। उसने एक व्यक्ति से कहा, ''मैं एक ही हाथ से पांच किलो का वजन उठाकर एक किलोमीटर दूर फेंक सकता हूँ।'' उसी रास्ते से एक आदमी जा रहा था। वह सब कुछ सुन रहा था। उसने पहलवान से कहा, ''ये ले, तू इस रूमाल को ही एक किलोमीटर दूर फेंक कर बता दे।'' उस पहलवान ने रूमाल उठाया और जोर से फेंका तो रूमाल उसके पैरों में ही गिर गया और पहलवान बहुत दुखी हुआ।

सलोनी मीना, 11 वर्ष, समूह– झरना, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा।

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

पूजा, उम्र–12 वर्ष, समूह–शीशम

एक बार एक नदी में चार बतखें तैर रही थी। उनमें एक बूढ़ी बतख भी थी जो पानी में ज्यादा तैर नहीं पा रही थी। बूढ़ी बतख उनकी पीठ पर बैठकर तैरती थी। एक दिन बूढ़ी बतख नदी के पार रह गई। उसे नदी में एक मछली दिखाई दी.....।

नीरू, *9 वर्ष, समूह–सागर, उदय सामुदायिक पाठशाला, गिरिराजपुरा द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

एक थी चिड़िया
लाई वह गुडिया ...

धर्मसिंह गुर्जर, *उम्र–9 वर्ष, बोदल द्वारा शुरू की गई कविता को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

विष्णु, कक्षा–8, प्रताप

मनीष,
समूह–शीशम,
उम्र–8 वर्ष

पहेलियों के ज़वाब –

1. कुर्सी 2. मेहंदी 3. दीपक 4. ताला 5. बया का घोंसला

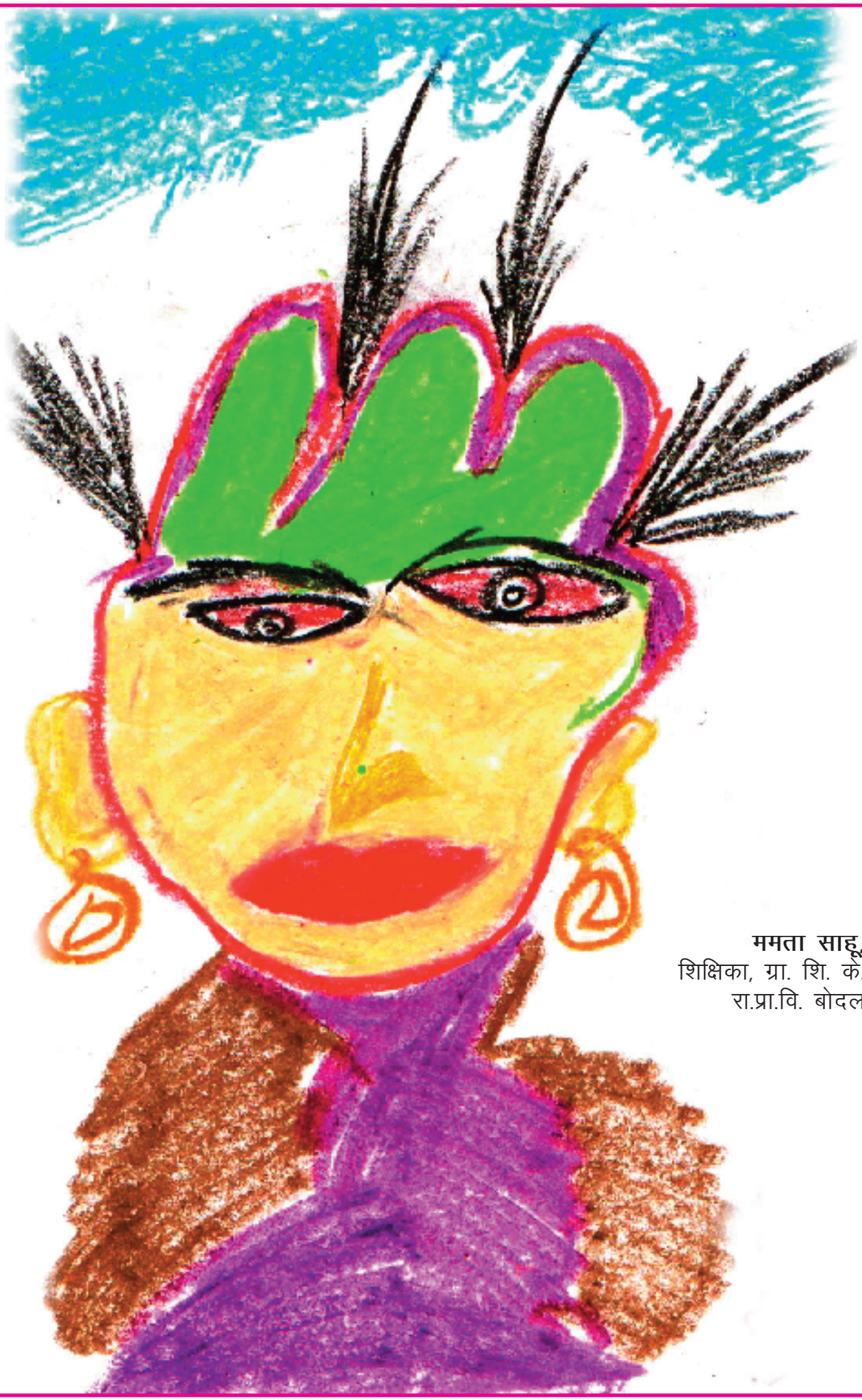

ममता साहू,
शिक्षिका, ग्रा. शि. के.
रा.प्रा.वि. बोदल